टैलीएसेंशियल लेवल -1

- 1. लेखांकन के मूल सिद्धांत
- 2. टैली का परिचय
- 3. खातों का चार्ट बनाए रखना
- 4. लेखांकन लेनदेन की रिकॉर्डिंग और रखरखाव
- 5. बैंकिंग
- 6. वित्तीय विवरण और एमआईएस रिपोर्ट तैयार करना
- 7. डेटा सुरक्षा
- 8. कंपनी डेटा प्रबंधन
- 9. वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी)

टैली प्राइम क्या है ? Tally Prime यह Tally ERP 9 का नवीनतम संस्करण है, टैली प्राइम एक accounting software है जिसे **Tally Solution Private Limited** द्वारा विकसित किया गया है, जिसमे हमें QR Code, E-invoice, E-Way Bill, Multi Printing, Bank Cancellation update, Oman VAT, e-payment के साथ ही साथ यूजर फ्रेंडली interface तैयार किया गया है.

Tally Prime Launch Date – Tally Prime को **9 नवंबर 2020** को टैली प्राइवेट सलूशन लिमिटेड द्वारा लॉन्च किया गया है.

Tally Prime Download 32 bit– Tally Prime 32 bit version में उपलब्ध नही है, केवल 64 bit में टैली प्राइम को install किया जा सकता है.

Tally की विभिन्न version –

1. Tally 3.0 (1990) – टैली 3.0 टैली का पहला संस्करण है

2. Tally 3.12 (1991)

3. Tally 4 (1992)

4. Tally 4.5 (1994)

5. Tally 5.4 (1996)

6. Tally 6.3 (2001)

7. Tally 7.2 (2005)

8. Tally 8.1 (2006)

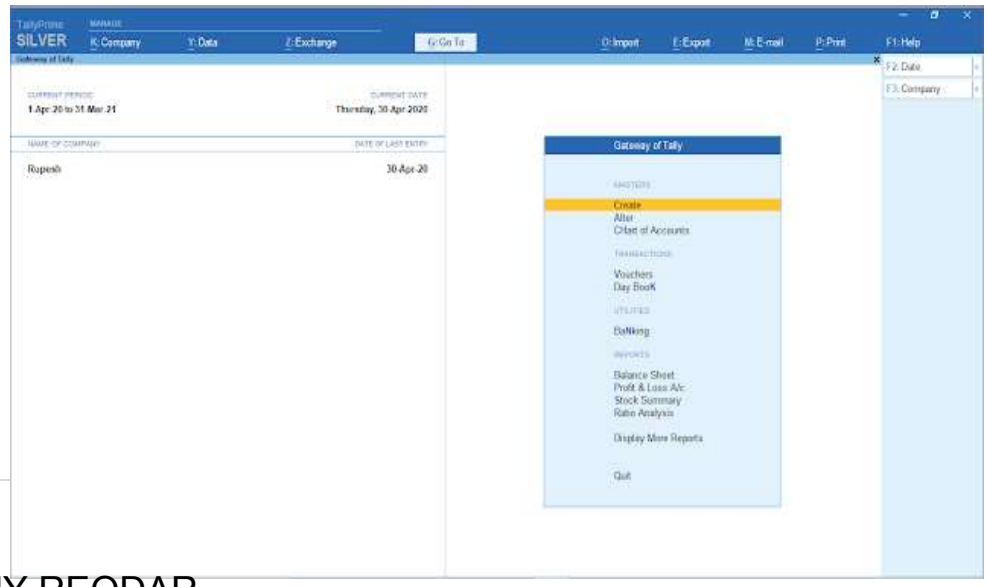

9. Tally 9 (2006)

10. Tally ERP 9 (2009)

Tally Prime

1. Goto or Switch Button

हम टैली प्राइम को ओपन करेंगे तो सबसे पहले हमें Home Screen दिखाई देगा जिसमे Top Menu में GoTo बटन दिखाई देगा जिसका shortkey alt + g है, जिसके माध्यम से हम Gateway of Tally में रहकर इस विकल्प के माध्यम से विभिन्न Ledgers, Vouchers और Report को Find और Open करने में सहायता करते हैं, यह विकल्प टैली को और easy बनाता है.

2. Create Option

टैली प्राइम को Tally ERP से आसान बनाने के लिए टैली में create किये जाने वाले ledger, voucher, Stock Item, Groups, Price Level, Godown इत्यादि आप्शन को create आप्शन में सम्मिलित कर दिया गया है.

3. Reports – रिपोर्ट को easy way में विशलेषण करने के लिए एक श्रेणीबद्ध तरीके से प्रस्तुत किया गया है। जबकि टैलीप्राइम बड़ी संख्या में रिपोर्ट प्रदान करता है, रिपोर्ट को पढ़ना और समझना समान इंटरैक्शन के साथ सरल होता है।

4. Create Professional GST Invoice

टैली प्राइम का उपयोग करके Professional GST Invoice बनाया जा सकता है, यह पुरे तरह easy और user friendly है जिससे GST Invoice create किया जाता सकता है.

5. Flexible purchase and sales management

Tally Prime में अब Purchase & Sales Management कार्य अब आसानी से किया जा सकता है.

6. Multiple Billing Format

टैली प्राइम में अब हम Multiple Billing Format में बिल तैयार कर सकते है.

7. E-Way Bill

Tally ERP 9 में पहले हमें E-Way Bill बनाने का विकल्प नही मिलता था लेकिन अब हमें Tally Prime में E-Way Bill Generate करने का विकल्प प्राप्त होता है.

8. Print logo in Simple Invoice Format

इस नए version में सिंपल invoice में भी लोगो प्रिंट कर सकते है निचे दिए गए स्टेप्स के साथ आप logo set कर सकते है पहले के version में logo प्रिंट में करने समस्या होता था उसे दूर किया गया है

9 e-Payments –

टैली प्राइम का उपयोग करके अब E-Payment किया जा सकता है, E-Payment के माध्यम से RTGS, NEFT और other Bank Transfer हेतु से सीधे Bank को instruction दिया जा सकता है.

Tally Prime का Interface कैसा है?

- Invoicing & Accounting
- Inventory Management
- Insightful Business Reports
- GST/ Taxation
- Credit and Cash Flow Management
- Multi-task Capabilities
- Go To Feature
- Banking
- Access Business Data Online
- Secure Data

टैली प्राइम के फायदे क्या है?

- Tally Prime का उपयोग हम अपने Trade, Business को Management करने के लिए कर सकते हैं, इसका मुख्य फायदा यह होगा की व्यापार में हो रहे Profit & Loss का ज्ञान आसानी से हो जाएगा.

- टैली प्राइम अकाउंटिंग सॉफ्टवेयर का उपयोग करने से हमारे Business में हो रहे Transaction की Monitoring किया जा सकता है.
- Tally Prime का उपयोग करके हम GST Return File अप्लाई कर सकते हैं.
- Tally के द्वारा ही हम Sales और purchase किए जाने वाले समानों पर GST Calculation बैठाकर GST Report तैयार करते हैं.
- Tally Prime का उपयोग करके हम सीधे E-Invoice जनरेट कर सकते हैं.
- टैली प्राइम के द्वारा हम सीधे अब Online Fund Transfer कर सकते हैं जैसे RTGS, NEFT, E-Fund Transfer इत्यादि.
- टैली प्राइम से हम Business के Data को Secrue तरीके से Store करके रख सकते हैं.
- टैली प्राइम के द्वारा Company Data को Backup ले सकते हैं और एक स्थान से दूसरे स्थान में जाकर Backup File का उपयोग करके किसी भी सिस्टम में कार्य कर सकते हैं.

Tally Prime (टैली के शब्दावली)

प्रत्येक लेन-देनों को याद रखना बड़ा मुश्किल एवं असम्भव है, इसी कारण बहीखाता का प्रादुर्भाव हुआ है, **लूकास पेसियोली** को **पुस्तपालन** (Bookkeeping) का जन्मदाता कहा जाता हैं.

भारत में लेखाकंन प्रमापों के निर्धारण तथा लेखाकारों के प्रशिक्षण का कार्य **Institute of Chartered Accountants of India and Institute of Costs and Works Accountants of India** द्वारा किया जाने लगा है।

Meaning and Definition of Book – Keeping

बहीखाता का अर्थ एवं परिभाषा

SAI COMPUTER ACADEMY REODAR

- ❖ बहीखाता को पुस्तपालन भी कहते है, इसका आशय है लेन-देनों को पुस्तकों में लिखना। व्यवसाय में कई प्रकार के मौद्रिक लेन-देन होते हैं जिनका व्यवस्थित रूप से पुस्तकों में लेखा करना आवश्यक होता है।

- ❖ व्यवसाय के समस्त वित्तीय लेन-देनों का नियमित, विधिवत, शुद्ध एवं स्पष्ट रूप से लेखा करने की कला को ही बहीखाता अथवा पुस्तपालन कहते है। जिस दिन लेन-देन होता है उसी दिन बहीखाता का कार्य किया जाता है।

Objective of Accounting – लेखांकन के उद्देश्य

- लेखांकन, जैसा कि हम जानते है कि समस्त व्यावसायिक व्यवहारों का पुस्तकों में विधिवत लेखा है। व्यवसाय एवं उपक्रम से संबंधित समस्त वित्तीय व्यवहारों की जानकारी लेखांकन के माध्यम से प्राप्त हो जाती है। इसके प्रमुख उददे्श्य निम्नलिखित है –

1. पूँजी का ज्ञान:-

2. क्रय – विक्रय का ज्ञान:-

3. देनदारों एवं लेनदारों का ज्ञान:-

4. व्ययसाय की वित्तीय स्थिति की जानकारी

5. लाभ – हानि का ज्ञान

Definition of Accounting

Accounting : – वह प्रोसेस है जिसके द्वारा वित्तीय लेनदेन का पहचान कर (Identification) एंट्री करना, सरांशीकरण कर रिपोर्ट तैयार करना होता है जिसके द्वारा व्यापार के वित्तीय स्थिती को जाना जा सकता हैं, लेखाकंन कहलाता हैं।

- ➢ **Business : –** लाभ कमाने के उदेश्य से किया गया वैधानिक कार्य व्यवसाय कहलाता हैं व्यवसाय एक व्यापक शब्द है जिसकें अंर्तगत व्यापार, उत्पादन कार्य, वस्तुओं या सेवाओं का क्रय – विक्रय, बैंक, बीमा, परिवहन कम्पनियाॅ इसके अंर्तगत आते हैं।

  Types of Business
  1. Manufacturing (उत्पादन)
  2. Trading (विक्रय)
  3. Servicing (सेवा)

SAI COMPUTER ACADEMY REODAR

- **Trade (व्यापार):-** लाभ कमाने के उदेश्य से किया गया वस्तुओं का क्रय – विक्रय व्यापार कहलाता हैं।

- **Profession (पेशा या वृत्ति):-** आय अर्जित करने के लिए किया गया कोई कार्य या साधन जिसके लिए पूर्व प्रशिक्षण आवश्यकता होती है, पेशा कहलाता हैं जैसे – डाॅक्टर, शिक्षक, वकील इत्यादि के कार्य पेशा के अंतर्गत आते हैं।

- **Proprietor (स्वामी या मालिक) :-** व्यवसाय को प्रारम्भ करने वाला व्यक्ति जो आवश्यक पूॅजी की व्यवस्था करता है तथा लाभ प्राप्त करने के अधिकारी व हानि का जोखिम वहन करता हैं, व्यवसाय का स्वामी कहलाता हैं।

- **Capital (पूजी) -** व्यवसाय के स्वामी द्धारा व्यवसाय को प्रारम्भ करने के लिये धन, रोकड़ या अन्य सम्पत्ति के रूप में लगाया जाता हैं उसे पूॅजी कहते हैं। व्यवसाय में पूॅजी लाभार्जन के उद्देश्य से लगाई जाती हैं लाभ का वह भाग जो व्यवसाय से निकाला नही गया हैं,

- **Drawing (आहरण)–** व्यवसाय के स्वामी द्धारा व्यवसाय के निजी उपयोग के लिये जो माल या रोकड़ निकाल लिये जाते हैं, उसे आहरण या निजी व्यय कहते है। आहरण से पूॅजी की मात्रा कम हो जाती हैं।

- **Transaction (सौदा या लेन – देन):–** दो पक्षो के मध्य होने वाले मुद्रा, माल या सेवा के पारस्परिक विनिमय को सौंदे लेन – देन कहते हैं। माल का क्रय – विक्रय, भुगतान का का लेना – देना आदि आर्थिक क्रियाए व्यावसायिक सोदे या लेन – देन कहते हैं।

- Types of Transaction
  1. Cash Transaction (नगद लेन-देन)
  2. Credit Transaction (उधार या साख लेन-देन)
  3. Bill Transaction (बिल लेन-देन)

- **Goods (माल)-** माल उस वस्तु को कहते हैं, जिसका क्रय – विक्रय या व्यापार किया जाता है। माल के अंतर्गत वस्तुओं के निर्माण हेतू प्राप्त कच्ची सामग्री, अर्द्धनिर्मित सामग्री या तैयार वस्तुएं हो सकती हैं.

- **Purchase (क्रय)-** जब व्यापारी द्धारा विक्रय हेतू माल की खरीदी की जाती है, उसे क्रय कहा जाता है।। यह खरीदी कच्ची सामग्री या तैयार माल के रूप् में हो सकती हैं। सम्पत्तियों का क्रय, क्रय में शामिल नहीं हैं, क्योंकि ये पुनः विक्रय के लिये नही होती हैं।

- **Purchase Return (क्रय वापसी)-** क्रय किये गये माल में से किसी कारणवश जो माल वापस कर दिया जाता हैं, उसे क्रय वापसी अथवा बाह्य वापसी (Return Outward) कहते है।

- **Sales (विक्रय)-**लाभ प्राप्ति के उद्देश्य से जब क्रय किया हुआ माल बेजा जाता हैं उसे विक्रय कहते हैं। नगद माल बेचने को नगद विक्रय (Cash Sales) तथा उधार माल बेचने को उधार विक्रय (Credit Sales) कहते हैं।

- **Sales Return (विक्रय वापसी)-** विक्रय किये गये माल में से किसी कारणवश ग्राहक द्धारा वापस कर दिया जाता हैं, उसे विक्रय वापसी अथवा आन्तरिक वापसी कहते है। टैली में Sales Return होने पर उसे जर्नल वाउचर या डेबिट नोट में एंट्री किया जाता है।

- **Stock -** एक निश्चित समयावधि के उपरान्त जो माल बिकने से रह जाता हैं, उसे स्टाक कहते है किसी व्यापारिक वर्ष के अंतिम दिन जो बिना बिका माल रह जाता है उसे अंतिम स्टॉक (Closing Stock) कहते है। नवीन व्यापारिक वर्ष के प्रारंभ में यही स्टॉक, प्रारंभिक स्टॉक (Opening Stock) कहलाता है।

- ***Assets (सम्पत्तियां)*** – व्यवसाय की ऐसी सभी स्थायी उवं अस्थायी वस्तुएं जो व्यवसाय को चलाने के लिये आवश्यक होती हैं तथा का जिन पर व्यवसायी स्वामीत्व होता हैं, सम्पत्तियां कहलाली हैं। जैसे – यंत्र, भूमि वभन तथा व्यवसाय की निजी उपयोग मे होने वाले सभी यंत्र, फर्नीचर, प्रिंटर, कप्म्यूटर इत्यादि।

- **Types of Assets :**

1. **Fixed Assets स्थायी सम्पत्ति** –यंत्र, भूमि वभन तथा व्यवसाय की निजी उपयोग मे होने वाले सभी यंत्र, फर्नीचर, प्रिंटर, कप्म्यूटर इत्यादि

2. Current Assets चल सम्पत्ति – नगद रोकड. बैंक नगद इत्यादि

- ***Liabilities (दायित्व या देयताए)–*** व्यवसाय के देयधन को दायित्व कहते हैं व्यवसाय में कुछ आवश्यक राशियॉ ऐसी होती हैं, जिनको चुकाने का दायित्व व्यवसाय पर होता है जैसे – पूॅजी, देयविपत्र, लेनदार, बैंक अधिविकर्ष आदि।

SAI COMPUTER ACADEMY REODAR

- **Revenue (राजस्व):-** राजस्व से आशय ऐसी राशि से है जो माल अथवा सेवाओं के विक्रय से नियमित रूप से प्राप्त होती है। व्यवसाय के दिन – प्रतिदिन के क्रिया-कलापों से प्राप्त होने वाली राशियाॅ जैसे – किराया, व्याज, कमीशन, बट्टा, लाभांश आदि भी राजस्व कहलाते है।

- **Expenses (व्यय):-** व्यवसाय में माल, वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन या प्राप्ति करने के लिये जो लागत आती है। व्यय कहते हैं। माल तथा सेवाओं की प्राप्ति के लिये भुगतान व्यय के अंतर्गत आते हैं। मजदूरी, भाड़ा, रेल गाड़ी तथा माल के वितरण एवं विक्रय पर भुगतान गया वेतन, किराया, विज्ञापन, व्यय, बीमा आदि भी में व्यय में शामिल हैं।संक्षिप्त में राजस्व में वृद्धि करने की लागत को व्यय कहते हैं।

- **Types of Expenses**

1. Direct Expenses – माल तथा सेवाओं की प्राप्ति के लिये भुगतान – मजदूरी, भाड़ा, रेल गाड़ी तथा माल के वितरण एवं विक्रय पर भुगतान

2. Indirect Expenses – राजस्व में वृद्धि, वेतन, किराया, विज्ञापन, व्यय, बीमा आदि Expenditure (खर्च):- खर्च वह राशि होती है जो व्ययसाय की लाभ-अर्जन क्षमता की वृद्धि हेतू भुगतान की जाती है। व्यवसाय में सम्पत्तियों के अधिग्रहण या प्राप्ति हेतू जो भुगतान किया जाता है वह खर्च कहलाता हैं।

- **Gain (लाभ):-** यह एक प्रकार की मौद्रिक प्राप्ति है, जो व्यवसाय के फलस्वरूप् प्राप्त होती है जैसे यदि 1,00,000 रूपये मूल्य की माल को 1,50,000 रूपये में बेचा जाएगा तो 50,000 रूपये की प्राप्ति लाभ कहलेगा।

- **Cost (लागत):-** व्यवसाय एवं उसके कार्यो में प्रयोग होने वाले कच्चे माल, सेवा व ऋण, उत्पादन या उसे उपयोगी बनाने हेतू किये जाने वाले समस्त प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष व्ययों के योग को ही वस्तु की लागत कहते है। वस्तु के अंतर्गत कच्चा माल या सम्पत्तिया शामिल रहती है।

- ***Discount (कटौती, बट्टा या छूट):'-*** व्यापारी द्धारा अपने ग्राहकों को दी जाने वाली रियायत को कटोैती, छूट या बट्टा कहते है। इसे उपहार भी कहा जाता है। बट्टा दो प्रकार के होते हैं –

1. व्यापारिक बट्टा (Trade Distcount) :- विक्रेता अपने ग्राहकों को माल खरीदते समय उसके अंकित मूल्य अर्थात् सूची मूल्य में जो रियायत (छूट देता है) करता है, उसे व्यापारिक

SAI COMPUTER ACADEMY REODAR

बट्टा कहते है यह माल की बिक्री बढ़ाने के उद्देश्य से दिया जाता हैं। इसका लेखा पुस्तको में नही किया जाता है

2. नगद बट्टा (Cash Discount) :- निश्चित अथवा निर्धारित अवधि में नगद राशि या चैक द्धारा मूल्य का भुगतान करने पर जो छूट दी जाती है, उसे नगद बट्टा कहते है इसका लेखा पुस्तको में किया जाता है

- **Debitor (देनदार या ऋणी):-** जो व्यक्ति, फर्म या संस्था से माल अथवा सेवाएं उधार लेते है, उसे व्यापार का ऋणी या देनदार कहते है। देनदारो को 'विविध देनदार' या Sundry Debtor कहते है।

- **Creditor *(लेनदार या ऋण दाता):-*** जिस व्यक्ति, फर्म या संस्था से माल अथवा सेवाएं उधार ली जाती है उसे त्रणदाता या लेनदार कहते है माल उधार खरीदने पर ही लेदनदारों का उदय होता है लेनदारो को 'विविध लेनदार' (Sundry Creditors) कहते है। जैसे – लखन ष्याम से 2 प्रिंटर 20000 रूपये मे खरीदा ।

- **Receivable (प्राप्य):-** व्यवसाय से सम्बधित ऐसी राषि जिसको प्राप्त किया जाना है उसे प्राप्य कहते है। व्यापार में माल की उधार बिक्री होने पर क्रेता को देनदार कहा जाता है, जिनसे राषि प्राप्त की जाना होती हैं .

- **देयतायें (Payable) –** व्यवसाय में कुछ ऐसी राषियां होती है जिन्हेभविश्य में व्यापारी को चुकाना होता है उन्हे देयताएं (Payable) कहते है। जिनसे व्यापार द्धारा उधार माल क्रय किया जाता है वे व्यापार के लेनदार (Creditors) कहते है।

- **Entry (प्रविश्टि):-** लेन देन को हिसाब की पुस्तको में लिखना प्रविश्टि कहते है

- **कुल बिक्री (Turn Over) –** एक निश्चित में होने वाले नगद तथा उधार विक्रय का योग कुल विक्रय या Turn Over कहते है। विक्रय नगद + विक्रय उधार = Turn Over.

- **Insolvent / दिवालिया:-** जो व्यक्ति अपना ऋण चुकाने मे असमर्थ हो जाता है उसे दिवालिया कहते है। ऐसे व्यक्ति का दायित्व उसकी सम्पत्ति के मूल्य से अधिक होता है। ऐसी स्थिति में वह अपना ऋण पूरी मात्रा में नही चुका सकता है। आंशिक रूप में ऋण चुकता करने के लिये उसे न्यायालय की शरण लेनी पड़ती है। न्यायालय उसे दिवालिया

घोषित कर आंशिक रूप् से ऋण चुकाने की अनुमति दे देता है जिससे वह अपने ऋण से मुक्त हो जात है.

- **Bad Debts / ऋण:-** ऋणी की असमर्थता अथवा दिवालिया हो जाने के कारण जो रकम वसूल नहीं हो पाती, लेनदार के लिये डूबत-ऋण या अप्राप्य ऋण कहलाती है।

- **Commission / कमीशन या वर्तन:-** व्यापारिक कार्यो में सहयोग करने अथवा प्रतिनिधित्व करने के प्रतिफल में प्रतिनिधि या अभिकर्ता को जो पारिश्रमिक दिया जाता है उसे कमशीन कहते है .

- **फर्म (Firm) :-** सामान्य अर्थ में फर्म से आशय उस संस्था से है जो कि साझेदारी स्थापित कर व्यापारिक या व्यावसायिक कार्य करती है, किंतु व्यापक अर्थ में प्रत्येक व्यापारिक इकाई को फर्म के नाम से संबोधित किया जा कसता है ।

Account / Leger / खाता :- लेजर या खाता एक तालिका है जिसमे सोदा उनके स्वभाव के अनुसार वर्गीकृत करके एक शीषक के अंतर्गत एक स्थान पर क्रम से लिखा जाता है, सरल शब्दो में किसी व्यक्ति, सम्पत्ति तथा आय-व्यय आदि से संबधित लेखो को छांटकर जो सूची बनाई जाती है उसे *Account / Leger / खाता* कहते है।

Account शब्द का अंग्रेजी में संक्षिप्त रूप में A/c होता है। लेखो में प्रायः इस संक्षिप्त रूप का ही प्रयोग होता है और प्रत्येक खाता दो पक्षों में विभाजित रहता है। बाये पक्ष को नामे Debit और दाहिने पक्ष को Credit कहते है